॥ ओ३म् ॥

मुशाफिर की धूम

जिसमें

कुमर सुखलालसिंह जी आर्य्य मुसाफिर के
सामाजिक, इतिहासक, तथा देश भक्ती
से भरे हुये भजनों का अपूर्व संग्रह
और भी कवियों के अच्छे
अच्छे भजन हैं।

प्रकाशक—

लक्ष्मण पथिक

पुस्तकें मिलने का पता—

आर्य पुस्तक भण्डार नई सड़क, देहली।

प्रथम बार ४०००] [मूल्य =)

IMPERIAL RECORD Department
1042.
23.7.38.
357

"Musafir Ke Bhajan" in Hindi
Chief Commr. Delhi.
188
145
1 copy
569
357
28.7.38

* ओ३म् *

मुसाफ़िर के भजन

कुंवर सुखलाल सिंह आर्य्य-मुसाफ़िर

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1234/10/21
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 567

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 561
Date 14.12.71
GOVT. OF INDIA

॥ ओ३म ॥

मुसाफिर की धूम

गजल न० १

जो भगवान से लो लगाते रहेंगे।
तो जो मुंह से माँगगे पाते रहेंगे॥
सुनेगा न फरियाद ईश्वर भी उनकी।
जो बातें ही बातें बनाते रहेंगे॥
न होगी अगर ऐकता हिन्दुओं में।
हमेशा मार गैरों की खाते रहेंगे॥
लगाया न छाती अछूतों को हमने।
तो यह लाल जाति से जाते रहेंगे॥
अहद कर लिया है कि जब तक जियेंगे।
वतन से महोबत निभाते रहेंगे॥
उठायेंगे उनको कि जो गिरचुके हैं।
जो रूठे हैं उनको मनाते रहेंगे॥
बला से कफस में हों या आसियाँ में।
चमन के लिये चहचाहते रहेंगे॥
न पहुंचेगे मंजिल पै जबतक मुसाफिर।
कदम हम बराबर बढाते रहेंगे॥

महात्मा गांधी नं० २।

न पूछो वह भारत में क्या बन के आया।
के दर्दे वतन की दवा बनके आया॥
न रो मादरे हिन्द यादे खुदा कर।
के गांधी तेरा ना खुदा बनके आया।
जो आया था कल रण की हंकार बन कर।
वही शाँति का देवता बन के आया॥

गजल नं० ३

हमसे भी बुरी होगी न तकदीर किसी की।
देखी सुनी न ऐसी है तहक़ीर किसी की॥
दीवारों में जाते हैं चुने कौम के बच्चे।
चलती है गले पर कभी शमशीर किसी की॥
दाखिल हैं कभी हलके गुलामी में किसी की।
पहने हुए हैं पाँव में जंजीर किसी की॥
जलती है चिताओं में कभी देवियां ज़िन्दा।
मक़तल में कभी कौम के हैं बीर किसी की॥
लुटवाता है महमूद कभी आन के मन्दिर।
खिचवाता है खाल आके जहांगीर किसी की॥

क्या क्या न सहे कौम के बच्चों ने मज़ालिम ।
छाती में घुसे हैं छुरी और तीर किसी की ॥
मिट्टी में मिलाता है हमें आन के कोई ।
बनती है इसी ख़ाक से अक्सीर किसी की ॥
मुग़लों के ज़माने में हुआ ऐसा भी अक्सर ।
हम दार पै खींचे गये तकसीर किसी की ॥
ऐ चारागरो बहरे ख़ुदा अब तो बचालो ।
देखो तो जो हो सकती है तदबीर किसी की ॥
कोशिश तो 'मुसाफिर' ने की बहुतेरी लेकिन ।
कर सकता है ख़िदमत ही क्या राहगीर किसी की ॥

हिन्दुओं से खिताब नं० ४

उठ खड़े हो हिन्दुओ काफी जलालत हो चुकी ।
बुज़दिलो मरदानगी सीखो नज़ाकत हो चुकी ॥
लाल लाखों कौम के गैरों को अब तक दे चुके ।
क्या गज़ब करते हो रहने दो सख़ावत हो चुकी ॥
ज़ालिमों को लोग जब मज़लूम बतलाने लगे ।
उठ गया इन्साफ दुनियां से अदालत हो चुकी ॥
पीठ ठोकी जारही है जब लुटेरों की जनाब ।
इस तरह बस दूर आपस की अदावत हो चुकी ॥

रंडियों को काम जब सौंपा गया तबलीग का।
उड गई तौहीद हजरत की रिसालत हो चुकी॥
आप ने बदला वफाओं का जफाओं में दिया।
तौ हमारी आपकी साहिब सलामत हो चुकी॥
अब कुरानों बाईबिल की दाल गल सकती नहीं।
वेद की रोशन जमाने में सदाकत हो चुकी॥

गजल न० ५

दयानन्द ने गर जगाई न होती।
तौ बेदार हरगिज खुदाई न होती॥
न बातिल परस्ती जमाने से मिटती।
जो वेदों की वन्सी बजाई न होती॥
निशां राम का कृष्ण का मिट चुका था।
ऋषि ने जो हल चल मचाई न होती॥
न इस्लाम के ढोल की पोल खुलती।
जो स्वामी ने हिम्मत दिखाई न होती॥
न विल बन्द होता कभी बाई बिल का।
खुदावन्द की जग हसाई न होती॥
जहन्नुम व जन्नत के खुलते न किस्से।
यूं अर्शे वरी की सफाई न होती॥

न बेवाओं की सुनता कोई आहोजारी।
यतीमों के दुख की सुनाई न होती॥
पता हिन्दुओं का जहाँ में न मिलता।
जो शुद्धी की बूटी पिलाई न होती॥
न सुनने को मिलते बतन के तराने।
अगर देश भक्ती सिखाई न होती॥
जिहालत की काली घटायें न टलती।
जो स्वामी की जल्वा नुमाई न होती॥
"मुसाफिर" अमर जिन्दगी तू न पाता।
धर्म पै जो गर्दन कटाई न होती॥

आर्य जाति की गर्ज। भजन न० ६

मेरा है मुहाफिज ईश्वर तो है कौन फिर जो दबासके।
तेरी क्या बिसात है ओ फलक जो जहाँ से मुझको मिटा सके॥
वही आन है वही शान है वही अपना जाहो जलाल है।
है मजाल किस की वह कौन है कि जो आँख मुख से मिलासके॥
मैं जननी राम और कृष्ण की थे शिवा प्रताप पिसर मेरे।
कोई कौम ऐसे बसर अभी, न बनासगी न बनासके॥
कोई पैदा करके दिखाये तो अर्जुन भीम से शेरे नर।
के गदा पकड़ले जो हाथ में तो जमीन तक को हिलासके॥

सिवा मेरे सारे जहाँ में किसे ऐसा फख्र नसीब है ।
दयानन्द जैसा जो रहनुमा पहलू में अपने खिला सके ॥
मेरे मुंह से नाले अगर उठें तो लगादे आग जहान में ।
मेरे मुंह से निकले जो आह भी तो समन्दरों को सुखासके ॥
मेरा हंसराज है सन्तरी, मेरा मोलवी है हिमायती ।
मेरी लाज रखता था लाजपत जो मरे हुवों को जिलासके ॥
मेरे लाल उठो कमर कसो चलो वेद धर्म पर मर मिटो ।
रहे हक में सीना सिपर रहो, न अजल भी पीछे हटा सके ॥

कवाली न० ७ ।

खौफ आफत से कहा दिल में रिया आयेगी ।
बात सच्ची है जो वह लब पै सदा आयेगी ॥
दिल से निकलेगी न मर कर भी वतन की उलफत ।
मेरी मीट्टी से भी खुशबूये वफा आयेगी ।
गैर जोम और खुदी से जा करेगा हमला ।
मेरी इमदाद को खुद जाते खुदा आयेगी ॥
सामना शबर व सजाअत से करूंगा मैं भी ।
खींच के मुझ तक जो कभी तेगें जफा आयेगी ॥
आत्मा हूं मैं बदल डालूंगा फौरन चोला ।
क्या बिगाड़ेगी अगर मेरी कजा आयेगी ॥

मैं उठालूंगा बड़े शौक से उसको सरपर ।
खिदमते कौम में जो रंजो बला आयेगी ॥

अंबर अश्क बहायेगा मेरे लाशे पर ।
गम मनाने के लिये काली घटा आयेगी ॥

खून रोवेगी शमा भी मेरे मरने पै शफक ।
खाक उड़ाने के लिये बादेशबा आएगी ॥

जिन्दगानी में तो मिलने से झिझकती है फलक ।
खलक को याद मेरे बाद फना आएगी ॥

गजल न० ८

धर्म के नाम पर प्यारो तुम्हें मरना नहीं आता ।
लुहु से कासये तकदीर को भरना नहीं आता ॥
छुरी से पेट फड़वाना तुम्हें आता नहीं प्यारो ।
हकीकत की तरह कुर्बान सर करना नहीं आता ॥
धर्म की राह पर चलना तुम्हें अब हो गया मुशकिल ।
छुरी की धार टेढी पर कदम धरना नहीं आता ॥
तुम हो औलाद शेरों की मगर अब बहरे हस्ती में ॥
समय का फेर है सीधा तुम्हें तरना नहीं आता ।
तबाही का तुम्हारी एक ही कारण है बस मित्रो ।
तुम्हें कहना तो आता है मगर करना नहीं आता ॥

'मुसाफिर' महरबां सद महरबाँ है तेरी हिम्मत को।
धर्म की राह में ओ नर तुझे डरना नहीं आता॥

पं० लेखराम के जीवन का एक दृश्य

गजल नं० ६

लिफाफा हाथ में ला जब दिया माता ने बेटे को।
लगे झट खोल कर पढ़ने दिया है छोड़ खाने को॥
लिखा था उसमें कुछ हिन्दू धर्म खोने पर उद्यत हैं।
जो आसकते हो खत के देखते आओ बचाने को॥
मुसाफिर ने पढ़े जिस वक्त यह अलफाज उसखत के।
तो धोकर हाथ जल्दी से हुये तैयार जाने को॥
उठा बिस्तर पहन कपड़े किताबें साथ ले अपनी।
कहा नौकर से ला इक्का मैं हूं तैयार जाने को॥
कहा माता ने ऐ बेटा अभी तू आके बैठा था।
अभी फिर होगया तैयार तू परदेश जाने को॥
तू माता और पत्नी को कुछ ऐसा भूल जाता है।
नहीं आता महीनों तक हमें सूरत दिखाने को॥
यदि सुध बुध हमारी तू नही लेता न ले बेटा!
मगर लड़का लबेदम है नहीं खाता है खाने को॥
दया कर इस पै तो कुछ तू न ले अब नाम जाने का।

दवा करवा इसे ले जा हकीमों को दिखाने को ॥
यह सुन कर बात माता की मुसाफिर हंसके यूं बोले।
जमाने के लिये आया हूं मैं खिदमत बजाने को ॥
जो मरता है तो मर जावे बला से एक मेरा बेटा।
मैं जाति के बहुत से लाल जाता हूं बचाने को ॥
मुलाजिम भी सवारी उस समय लेकर है आपहुंचा।
लो माता जी नमस्ते मैं तो हूं मजबूर जाने को ॥
सवार हो रेल में पहुंचे वहां, जिस जाँ कि जाना था।
बचाया हिन्दुओं को जा यह अफसाना है गाने को ॥
सुबह को तार यह पहुंचा कि लड़का चलबसा जगसे।
तो बोले फिक्र ही क्या है हर एक आया है जाने को ॥
'मुसाफिर' धन्य तुम को आप थे संसार के प्यारे।
जो वैदिक धर्म की खातिर छुरा आये थे खाने को ॥

मुसलमानों से खिताब। गजल न० १०

कुराँ हरगिज कला अल्ला तुम्हारा हो नहीं सकता।
मुकाबिल वेद अकदस के बिचारा हो नहीं सकता ॥
नबी ने हाथ मारा चाँद के दो कर दिये टुकड़े।
यकीं इन अजब बातों पर हमारा हो नहीं सकता ॥
जमी जाये न हिल ! ये कोह मिसाले मेख हैं इस में।

अब इस साइन्स का जग में गुजारा हो नहीं सकता ॥
कि जिस में सिर्फ शक करने से काफिर कुफ्र होता है ।
किसी आकिल को वह मज़हब प्यारा हो नहीं सकता ॥
है रूहो मादा अबदी तो फिर अज़ली न होए क्यों ।
किसी दरिया का भाई एक किनारा हो नहीं सकता ॥
जहाँ हों हूरों गुलमाँ और नहरें मय की जारी हो ।
वहां पर जाते अकदस का नजारा हो नहीं सकता ॥
है तारीखे अरब कुरआं भला इलहाम हो कैसे ।
जनाब आली कभी जर्रा सितारा हो नहीं सकता ॥
है सच्चा धर्म वैदिक ही जिसे मन्तक की आतिश से ।
तपाले कोई आकर पारा २ हो नहीं सकता ॥
भला जो जहर पीवे छोड़ कर अमृत के प्याले को ।
कोई उससे अधिक बुद्धि का मारा हो नहीं सकता ॥
शरण लो वेद की 'सुखलाल, भवसागर से तरने को ।
तुम्हारे वास्ते दीगर सहारा हो नहीं सकता ॥

कव्वाली न० ११

बाइबिल क्या है ! ये एक फिसाना झूठा ;
खुदा का बेटा भी ईसू को बताना झूठा ॥
बिना सूरज के नहीं दिन का तसव्वुर मुमकिन ।

क्यों न फिर ? चौथे दिन सूरज का बनाना झूठा ॥
पांच रोटी व मछली से मसीह का भर पेट ।
हजारों औरतों मर्दों का खिलाना झूंठा ॥
इस पै भी तुर्रा ये कि खूब खिला ! कर बारह ।
टोकरे और भी झूंठन से बचाना झूठा ॥
तीन दिन बाद मसीह कब्र से जिन्दा निकले ।
ऐसे किस्से को कह देगा जमाना झूंठा ॥
खुदा ने अपनी शकल पर ही बनाया आदम ।
बाग की सैर उस कादिर को कराना झूठा ॥
गलत याकूब का अल्लाह से कुश्ती लड़ना ।
और पछताने का इल्जाम लगाना झूंठा ॥
इस में रुहानियत नामों निशां मिलती नहीं ।
पादरी जो लिये फिरते हैं तराना झूंठा ॥
शराबो मांस और बछड़े व भेड़ दुम्बों को ।
भेंट में जाते मुकद्दस को चढ़ाना झूंठा ॥
धर्म वैदिक है नुकाइस से मुबर्रा बिलकुल ।
गर हो हिम्मत तो इसे करके दिखाना झूंठा ॥
सवाल जब कोई 'सुखलाल' जड़ देता है कहीं ।
मुखालिफ भागते हैं करके बहाना झूंठा ॥

महर्षि क्या थें न० १२

बतायें तुम्हें हम दयानन्द क्या था।
ऋषि था फरिस्ता था या देवता था॥
थे विद्या से भरपूर उस के खज़ाने।
शहिन्शा था गो बज़ाहिर गदा था॥
रहा उम्र भर शिवा इक परस्ती।
वतन का था शैदा धर्म पर फ़िदा था॥
था मख़मूरो मसरूर पी जामे वहदत।
खुदा था वह और उस का खुदा था॥
अन्धेरे में जो ठोकरें खा रहे थे।
वह उन गुमरहों के लिये रहनुमा था॥
जिसे हमने गलती से समझा था दुश्मन।
वही किशतिये कौम का ना खुदा था॥
उसी की हिम्मत बचाया वगरना।
निशां हिन्दुओं का मिटा जा रहा था॥
ज़ुबां में थी योगी की तासीर ऐसी।
कि उसका सखुन नाव के बेखता था॥
किया जिसके झोकों ने सर सब्ज़ गुलशन।
वह बादे बहारी था बादे सबा था॥

घटाओं में चमकता था वह बर्क बन कर।
मुजस्सिम तजल्ली था नूरे खुदा था॥
ग़रज़ कोई माने न माने "मुसाफिर"
दयानन्द दर्दे वतन की दवा था॥

भजन न० १३।

हिन्दुओं से लड़ के मोमिन आखिर पायेंगे क्या।
हम भला इन के मिटाने से भी मिट जायेंगे क्या॥
हा अजल से तेगरानी जिन को विरसे में मिली।
खञ्जरो पिस्तौल से वो आज डर जायेंगे क्या॥
इन्तज़ारे हश्र हो जिनको वह मरने से डरें।
जो तनासुख़ मानने वाले हैं मर जायेंगे क्या॥
गम नहीं करते हैं गर अपना वह सोशल बाइकाट।
फिक्र इतना है कि जो मुफ़लिस हैं वह खायेंगे क्या॥
मुशरिको मरदूदो काफ़र जो समझते हैं हमें।
वोह हमारे वक्ते वद में काम फिर आयेंगे क्या॥
ख्वाब लेते हैं अरब के हिन्द का खाकर नमक।
ऐसे मोहसिन कुश हमें आज़ाद करवायेंगे क्या॥
जब तलक तालीम कुरआं पर है उन का एतकाद।
वोह न समझेंगे मुसाफिर आप समझायेंगे क्या॥

जब खजाना लुट गया फिर होश में आये तो क्या ।
वक्त खोकर दस्ते हसरत मलके पछतायें तो क्या ॥
कुछ अमीरों और रईसों ने समझ रक्खा है ये ।
हम रहें जिन्दा बला से कौम मिट जाये तो क्या ॥
चूमती हैं पाँव जिन के कुल जहाँ की नीयतें ।
उनकी नजरों में कोई फ़ाकों से मरजाये तो क्या ॥
जिन को अपने और पराये की नहीं मुतलक तमीज़ ।
उन को ईसाई मुसलमां कोई बन जाये तो क्या ॥
लीडरों को लीडरी की फ़िक्र दामन गीर है ।
दर बदर ऋषियों की सन्ताँ ठोकरें खायें तो क्या ॥
काश हर हिन्दु मुसाफिर की तरह यह सोच ले ।
धर्म के प्रचार में गर जान भी जाये तो क्या ॥

गजल न० १४ ।

हो रही हैं शाजिसों पर साजियें अगयार में ।
गर्क करना चाहते हैं वह हमें मझधार में ॥
किस लिये फौजें नजामी की खड़ी हैं सोच लो ।
और निगाहें किस पै किचलू की कड़ी हैं सोच लो ॥
आँख आगाखाँ की किस पर लड़ी हैं सोच लो ।
छावनी इसाईयों की क्यों पड़ी है सोच लो ॥

सब हमारी ताक में हैं हम ही हैं सब के शिकार ।
इसलिए हमको मुनासिब है के हों अब होशियार ॥
बस मुसाफिर छोड़ दो घर की लड़ाई छोड़ दो ।
हैं जो दिल टूटे हुए उलफत से उनको जोड़ दो ॥
हलकए तनजीम हिन्दुओं संगठन से तोड़ दो ।
लेकै शुद्धी की गदा तबलीग का सर फोड़दो ॥

नजम न० १५ ।

(मौलाना जफरअली खाँ की एक नजम)

वह छावनी इसलाम ने छाई थी जो टल पर ।
छाने को है एक रोज महावीरों के दल पर ॥
लरजां हैं इसी खौफ से ये हिन्द के बछड़े ।
जो कूदते हैं मालवी के खूंटे के बल पर ॥
कहते हैं के इसलामियों को पीस कर रखदो ।
यह काम करो आज न टालो इसे कल पर ॥
कहदो इन्हें अल्लाह के घर वालों को क्या खौफ ।
उस कौम से शेदा जो हो लात और हुबल पर ॥
लह बांधकर 'मुञ्जे' जो निकल आए तो हम भी ।
आते हैं तमन्चे को चढाये हुए कलपर ।

इसका उत्तर गजल न० १६

किस्से जफर सुनाता है तू क्या हमें "टल" के।
कर याद कारनामे महावीरों के दल के ॥१॥
बाबा ने जिन्हें भेड़ों की मानिन्द लताड़ा।
गाता है गीत क्या उन्हीं टल वालों के बल के ॥२॥
रणजीत की बहादुरी कर याद ओ जफर।
चटनी इन्हें बना दिया जिसने कि कुचल के ॥३॥
सौ बार सिजदा करते थे तेरे ये पहलवान।
नलवा जो देख लेता था तेवर भी बदल के ॥४॥
हम वह हैं जिन्हों ने शहे औरंगजेब से।
पैबन्दे जमीं कर दिये तलवों से मसल के ॥५॥
बछड़ों की तुझे क्या पड़ी ऊंटों की ले खबर।
गिर जांयें कहीं देख न कीचड़ में फिसल के ॥६॥
आये जो नजर ख्वाब "मुंजे" व "मालवी"।
खटिया से तले गिर पड़े मौलाना उछल के ॥७॥
मर्दुम परस्त को हो कब्रो ताजिया परस्त।
शैदा हमें बताते हैं लात और हुबल के ॥८॥
जिनको कलम पकड़ने तक का है नहीं शऊर।
दिखलाते हैं तमञ्चे वह बच्चे हमें कल के ॥९॥

छेड़ा जो मुसाफिर को तो पछताओगे जफर।
इन्सानियत है कुछ तो जुबाँ खोलो सम्भल के ॥१०॥

भगवान कृष्ण के चरणों में प्रार्थना

भजन नं० १७।

देर किस वास्ते घनश्याम लगा रक्खी है।
वक्ते इमदाद है सूरत क्यों छिपा रक्खी है॥
कैसे गोपाल हो गौओं की खबर लो तो सही।
आज दुष्टों ने नदी खूं की बहा रक्खी है॥
आप तो स्वर्ग में आनन्द उड़ाते होंगे।
यहां असुरों ने जमीं सर पै उठा रक्खी है॥
लाज अबलाओं की जाये जो तुम रहो खामोश।
जुबां जो आपने दी थी क्यों भुला रक्खी है॥
हम अपने दर्द का दरमां जो तलब करते हैं।
हाजिकुलमुल्क भी कहते हैं दवा रक्खी है॥
बचाना है तो बचा लो वगरना अय मोहन।
तुम्हारे भक्तों की इक दम में कजा रक्खी है॥
शुक्रिया उसका अदा कर तू मुसाफिर जिसने।
तेरी जुबान में जादू की सदा रक्खी है॥

नजम न० १८।

खानदे दिल में छुपा था मुझे मालूम न था।
परदा गफ़लत का पड़ा था मुझे मालूम न था॥
दैरो काबे में फिरा पूछता मैं तेरा निशान।
दिल ही में किबलानुमां था मुझे मालूम न था॥
ला मकां अर्शे मुअल्ला पै कहीं तख्त नशीं।
लेक वह फ़र्जी खुदा था मुझे मालूम न था॥
ला मकां तुझ को कहां ढूंढें वले तेरा मकां।
हैफ़ यह मकरो दगा था मुझे मालूम न था॥
हुआ मेंराज के धोके से मैं गरदूं गरदाँ।
कब भला मुझसे जुदा था मुझे मालूम न था॥
जान जाना के लिये जाने को तैय्यार ही था।
जान से जाना मिला था मुझे मालूम न था॥
मिस्ले आहू के मैं सर गर्दां फिरा सहरा में।
नाफे में नाफ छुपा था मुझे मालूम न था॥
मिस्ले बुलबुल के हर गुल को बनाया महबूब।
गुंचये दिल में छुपा था मुझे मालूम न था॥
तपशे दिल से माहो हूरों में रही कुछ न तमीज़।
अबरे गफलत से छुपा मुझे मालूम न था॥

हैफ़ नादानी से जम २ को कहा आवे हयात।
दिल ही में आवे वफ़ा था मुझे मालूम न था॥
रोजे रोशन की तरह दीद हुआ जलवा गर।
रात से दिन छुपा था मुझे मालूम न था।
"भोजूदत्त" जाग बहुत सोया नसीबा जागा।
यार पहलू में छिपा था मुझे मालूम न था॥

एक देश भक्त की तमन्ना

गजल नं० १६

सरफरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुये कातिल में है॥
रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज्जिते सहरान वर्दी दूरिये मंजिल में है॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मकतल में कातिल कह रहा है बार बार।
क्या तमन्नायें शाहदत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदो मुल्को मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गैर की महफिल में है॥
अब न अगले वल वले हैं और न अरमानों की भीड़।
एक मिनट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल में है॥

गजल न० २०

मुर्गे दिल मत रो यहां आंसू बहाना है मना।
अन्दलीबों को कफस में चहचहाना है मना॥
हाय जल्लादी तो देखो कह रहा शैय्याद यह।
वखत जिवाह बुलबुलों को तड़फड़ाना है मना॥
बखते जिबाह जानबर को देते हैं पानी पिला।
हजरते इन्सान को पानी पिलाना है मना॥
मेरे खून से हाथ रङ्ग कर बोले क्या अच्छा है यह।
अब हमें तो उमर भर महदी लगाना है मना॥
ऐ मेरे जखमे जिगर नासूर बनता है तो बन।
क्या करूं इस जखम पर मरहम लगाना है मना॥
खूने दिल पीते हैं असगर खाते हैं लख्ते जिगर।
इस कफस में कैदियों को आब दाना है मना॥

गजल न० २१

मिस्ल नाफे के छुपो नाफ में यारब प्यारा।
मिस्ल आहु तू फिरे दस्त में मारा मारा॥
परदाह गफलत का उठा बुलबुले शैदो दिल से।
उजड़ा जाता है चमन देखो तुम्हारा सारा॥
तुझको मन्जूर है आबाद रहे गुलजार अगर।

पढ गुलस्तां का सबक छोड़ सीपारह सारा ॥
काबोंओ दैरमें ढूंढे है तू किस को जाहिद ।
खानये दिल में बसे है वह तुम्हारा प्यारा ॥
बुत परस्ती का किया बिर्द जो तूने आबिद ।
बुत के मानिन्द हुआ ढंग तुम्हारा सारा ॥
उसको जब्बार कहाँ आप हुए संग दिल ।
जाते अकदस का हो फिर कैसे गुजारा प्यारा ॥
ख्वाब में भी नही देखा है वह महबूबे हसीं ।
नक्स फिर कैसे मुसब्विर ने उतारा प्यारा ॥
होवे सदचाक जिगर जिसके हो सदहा महबूब ।
दिल्लगी एक से दिल हो नहीं पारा पारा ॥
हम फिदा उसपै जुदा हम से न हो यक लहजा ।
हो अलहदा नहीं दरिया से किनारा प्यारा ॥
है ये ईमाये दयानन्द कि होवे अकसीर ।
'भोजदत्त' जिसने किया नफस को पारा पारा ॥

गजल न० २२ ।

पाव जंजीरे जहल मुल्क खुदा का देखा ।
जिसको देखा है गिरफतार बला का देखा ॥
खुद पसन्दी से मियाँ आप खुदा बन बैठे ।
हैफ तुमने नहीं कानन खुदा का देखा ॥

कैसे दीदार मयस्सर हो हुमा का तुमको ।
बस किसी ने भी नहीं साया हुमा का देखा ॥
खूब बिठलाया है बेकार खुदाबन्दे करीम ।
अदल के वास्ते क्या रोज जजा का देखा ॥
गर्दिशे दिल को जरा अपनी नहीं देखते हो ।
अपना रुख देखा न रुख किबलेनुमा का देखा ॥
क्यों तकब्बुर के नशे में तू बहुत बकता है ।
तुझको पाबन्द नहीं शर्मो हया का देखा ॥
बजह बरबादी हमारी तो ये मैख्वारी है ।
सर बरहनामी खुला बन्द किबा का देखा ॥
हमको बिस्मिल जो किया आपने बिस्मिल्लाह से ।
कार रहमान का क्या जुल्मो जफा का देखा ॥
रात दिन खूं में हमारे जो रंगो दस्तोपा ।
खूं हमारा अजी क्या रङ्ग हिना को देखा ॥
जुल्मों जोहलत से न हरगिज भी अंस पाओगे ।
जिसको देखा है उड़ाता हुआ खाका देखा ॥
हूरो गल्मा कि जोतहरीक करी कुरआँ ने ।
उसने भी हूरे बहश्ती का झपाका देखा ॥
ऊँची दुकान है इस्लाम की फीका पकवान ।
गर्म बाजार मियां मकरो दगा का देखा ॥

जुल्म बेकस पै किया जिसने कहें स्वामी जी।
'भोजदत्त' उसने भी बस राह फना का देखा॥

गजल न० २३।

बजह बरबादी जहालत हमने पाई आपकी।
इसलिये छोड़ी मुसलमाँ आशनाई आप की॥
नाम उस रहमाँ का ले कर रहे हो कत्ले आम।
खूब ही हजरत ने की है रहनुमाई आपकी॥
अर्श पर गोशानशीनी की खुदा ने इख्तियार।
देख ली हैं हमने बस सारी खुदाई आपकी॥
हो गया लाचार शैतां से जिबस कादिर करीम।
लेक उस शैताँ ने की हैं पेशवाई आपकी॥
गर समझते हो ख़ुदा कमजोर है शैतान से।
ऐसे रुसतम से हुई क्यों ना रसाई आपकी॥
कर रहा शैतां बगावत उस खुदा के मुल्क में।
खा रही बस खल्क को बेएतनाई आपकी॥
रात दिन हूहू करें हैं कौन सुनता है मगर।
रोज यहशर को फकत होवे सुनाई आप की।
अफू की उम्मेद है जो वाद तोवह के अजीज।
है वह आदिल कब करे पिनहां बुराई आपकी॥

तुम कहो शैतां को मुजरिम वह तुम्हें बतलागया।
कौन वहाँ जाकर करायेगा सफाई आप की ॥
गर तकब्बुर है तुम्हें हजरत मुहम्मद शाह पर।
क्यों नहीं शैताँ से फिर इज्जत बचाई आपकी ॥
क्या वजह फर्मान ईसा से हैं मुनकिर मुहम्मदी।
पेश्तर ईसा ने की थी रहनुमाई आपकी ॥
मूसा और ईसा मुहम्मद होवेंगे दरबार में।
देखिये फिर कैसे होवेगी रसाई आपकी ॥
करते हो उनके भरोसे पर जुल्मो सितम।
है नतीजा जुल्म का हो रूस्याही आपकी ॥
गर खुदा के हुक्म की तामील तुम करते रहो।
देखें फिर कैसे करे शैताँ बुराई आपकी ॥
है यह ईमाए दयानन्द अपने खालिक से डरो।
"भोजदत्त" कैसे न होवे फिर भलाई आपकी ॥

इस्लामी दुनियां से प्रार्थना

गजल नं० २४

आर्य्यों की नस्ल हो मुसलिम कहाना छोड़ दो।
छोड़ दो इस्लाम का झूंठा फिसाना छोड़ दो ॥
एक ईश्वर की करो पूजा तुम अब ब्बहरे खुदा।

संगे असवद को मियां जी सर झुकाना छोड़दो ॥
है रवाँ गंगा तुम्हारे दर पै सदियों से अजीज।
जाके मक्के आबेजमज़म भर के लाना छोड़दो ॥
छोड़ दो दैरोहरम ऋषियों की तुम सन्तान हो।
कब्र पर पीरों फकीरों के भी जाना छोड़ दो ॥
तुम बने दोस्तो सब पाक खाके हिन्द से।
टर्की और ईरान के अब गीत गाना छोड़ दो ॥
क्या मजा हो गर फरिश्तों से मैं कहदूं अर्श के।
तुम खुदा का तख्त अब सर पर उठाना छोड़दो ॥
गर तुम्हें दरकार है रहमत खुदा की भाइयो।
खून नाहक बेकसों का तुम बहाना छोड़ दो ॥
बैठ उठ और लेट जाने से नहीं मिलता खुदा।
इस लिये अब तुम निमाजे पंजगाना छोड़ दो ॥
हो चुकी अब दिल्लगी बरसों खुदा के वास्ते।
हूरो गुलमाँ से मियाँ अब दिल लगाना छोड़ दो ॥
है यह तस्नीफे, मुहम्मद मत खुदा का नाम लो।
दोस्तो कुरआँ को इहलामी बनाना छोड़ दो ॥
कैद मुर्दों को कयामत तक की खातिर कब्र में।
मत करो अब ये खुदाई जेलखाना तोड़ दो ॥
गर कहीं मिल जाय मुझको तो कहूं कर जोड़ कर।

मैं खुदा से अर्श का दीवानखाना छोड़ दो॥
कर दिया बदनाम इसने दीनों दुनियां में तुम्हें।
भाइयो कुरआन पर ईमान लाना छोड़ दो॥
है "मुसाफिर" की सदा सुन लो खुदा के वास्ते।
बुलबुलो इस्लाम का अब आशियाना छोड़ दो॥

गजल न० २५

शरे बाजार करते हैं जो तह्कीर शुद्धी की।
उन्हो के मुंह से सुन लेना कभी तहरीर शुद्धी की॥
कभी बेकार जासकती नहीं तदबीर शुद्धो की।
खिलायेगी नये गुल एक दिन तासीर शुद्धी की॥
अगर आवाज़ हक शुद्धी नहीं है शेख जी साहब।
तो रखती है असर बीजली का क्यों तकरीर शुद्धीकी॥
मैं जब दिलदाये वैदिक धर्म हूं तो राहे हक पर हूं।
न क्यों पेसे नजर हर दम रहे तस्वीर शुद्धी की॥
नहीं रहता है अरसे तक ख्याल मसजिद वो काबा।
जो सुन लेते हैं मुल्लाजी कहीं तकरीर शुद्धी की॥
कयामत का नजाराह क्यों न नजरों में समाजाये।
डराती है इन्हें रातों को जब तसवीर शुद्धी की॥
मुखालिफ जिस कदर हो सब के छक्के छूट जाते हैं।

जिधर एक बार चल जाती है यह शमशीर शुद्धी की ॥
गई इसमत मिलेगी फिर इसी से हिन्दुवो तुमको ।
बनायेगी तुम्हे कुन्दन यही अकसीर शुद्धी की ॥
बहजे कामयाबी का यही जीना जमुर्रद है ।
जो करते हैं उन्हें करने भी दो तहकार शुद्धी की ॥

गजल न० २६ ।

नोजवानों धर्म का कुछ काम करना सीख लो ।
धर्म के मैदान में कट कट के मरना सीख लो ॥
तुम सहो सो आफतें लेकिन न हो अवरू पै बल ।
सर को वैदिक धर्म पर कुरबान करना सीख लो ॥
दुशमनों को भी खिलाओ नख्ले वैदिक का शमर ।
सत्य के रस्तों पर तुम हरदम विचरना सीखलो ॥
कौन कहता है कि मुल्की कान में हिस्सा न लो ;
धर्म के झण्डे तले एकतर होना सीख लो ॥
जान देदी सहीद अकबर ने जैसे धरम पर ।
वैसे ही तुम धरम का उद्धार करना सीख लो ॥
था मुसाफिर दरअसल मैदान का अपने धनी ।
मित्रवर अब तुम भी कुछ उपकार करना सीख लो ॥

गजल न० २७ ।

ईश्वर मेरा यह तन मन संसार के लिये हो ।
यह जिन्दगी हो लेकिन उपकार के लिये हो ॥
शानों पे सर अगर हो तलवार के लिये हो ।
खन्जर चले न हाथों में वार के लिये हो ॥
खिदमत करूं मैं सब की खिदमद गुज़ार बन कर
दुश्मन के भी न खटकूं आंखों में खार बन कर ॥
जल्वे सदाकतों के आलम को मैं दिखादूं ।
बातिल परस्तियों को राहे अदब बतादूं ॥
इस्लामों ईस्वीयत को मैं राहे हक पै लादूं ।
और हर बशर को दिल से मैं आर्य्य बनादूं ॥
वहमाते बातिला को मैं दहिर से हटादूं ।
और जज्ब को जहां से बस यककलम मिटादूं ॥
इस शर्त पर रहे अब अपनी ज़ुबां दहन में ।
पहुंचे सदा हमारी फ़ारिस अरब यमन में ॥
चर्चा ये वेद घर घर फिर से हो इस वतन में ।
लहराये झण्डा वेदों का चीन और खुतन में ॥
मक्के के मन्दिरों में हो वेद पाठ जारी ।
राकफ़िल्ला में गूंजे जा कर सदा हमारी ॥

फिर तुझ से पूंछता हूं अय शेख क्या मजा हो ।
जब हर बशर के दिल में ही खानये खुदा हो ॥
रूये जमी से आती एक ओ३म् की सदा हो ।
हर सर अदब से वेदों के रूबरू झुका हो ॥
दैरो हरम के झगड़ों से सब निजात पायें ।
शेखो पुजारियों के फन्दे से छूट जायें ॥
और दें दुआयें मिलकर उस नाखुदा को सारे ।
हम डूबतों को लाया जो खींच कर किनारे ॥
तूफाने बहिरे हस्ती से जिसने पार उतारे ।
गूंज उठें उसकी खातिर हां महरवां के नारे ॥
कदमों में उस ऋषि के दें सर झुका 'मुसाफिर'
और आर्य्य बनें सब दिल से दुआ मनायें ॥

शेख़ और हम

गजल नं० २८

वह सितम करने के सामान किये बैठे हैं ।
हम उधर जान भी कुरबान किये बैठे हैं ॥
अजमाएं तो सही धरम की ताकत को भी ।
कैद क्यों दिल में वह अरमान किये बैठे हैं ॥
कत्ल के वास्ते मकतल में वह आयं तो सही ।

क्यों खता पहले ही ओसान किये बैठे हैं ॥
नेकी का बदला यही है वह सताये हमको ।
जिनकी गरदन पर हम ऐहसान किये बैठे हैं ॥
हाँ तेरी दोजख व जन्नत को खुदा या महशूर ।
आज हर सिमत में इन्सान किये बैठ हैं ॥
शेख मत उलझो मुसाफिर से नदामत होगी ।
हिफज यह सारा ही कुरान किये बैठे हैं ॥

हिन्दुओं से

गजल नं० २६ ।

वक्त कहने का नहीं कुछ कर दिखाओ हिन्दुओ ।
कौम की बिगड़ी हुई किस्मत बनाओ हिन्दुओ ॥
है इसी में राज पिन्हाँ बस तुम्हारी जीस्त का ।
अपने अन्दर संगठन शक्ति बढ़ाओ हिन्दुओं ॥
जिन को ठुकराते रहे हो आज तक कह कर अछूत ।
प्यार से उनको कलेजे से लगाओ हिन्दुओ ॥
रो रहीं विधवा करोड़ों ही तुम्हारी कौम में ।
जिस तरह मुमकिन हो उनका दुख मिटाओ हिन्दुओ ॥
आप के भाई जो बन बैठे हैं ईसाई यवन ।
इन को वैदिक धर्म का अमृत पिलाओ हिन्दुओ ॥

शौक से तालीम दो बच्चों को इङ्गलिश की मगर।
सब से पहिले वेद की बानी पढाओ हिन्दुओ।
सर बकफ होकर 'दयानन्द' और 'मुसाफिर' की तरह।
कुल जहां में वेद का डंका बजाओ हिन्दुओ॥
खो चुके हो अपनी गफलत से हजारों लाल तुम।
अब लुटेरों से न अपना घर लुटाओ हिन्दुओ॥
तोड़ दो बन्धन पुराने ढोंग और पाखण्ड के।
मिस्ल मर्दों के कदम आगे बढाओ हिन्दुओ॥
मानलो कहना "मुसाफिर" का न आपस में लड़ो।
चालबाजी में निज़ामी की न आओ हिन्दुओ॥

॥ समाप्त ॥

पुस्तक मिलने का पता—

आर्य्य पुस्तक भण्डार,

नई सड़क, देहली।

लाला दीनानाथ के प्रबन्ध से दीनानाथ प्रेस, दरीबा कलां, देहली में छपी।

नई नई पुस्तकों की लूट

व्योपारियों के लिये खास रियायत

भीषम की धूम	≡)	चमन की चिड़िया	=)
चालबाज़ों की कहानियां	=)	सतसंग प्रकाश गुटका	≡)
सावन की बहार	=)	भजन प्रेमसागर	=)
हरिजनभजनावली	=)	महात्मा रावण	=)
गौ भजन संग्रह	=)	योग आसन	।=)
सन्ध्या गायन	=)	पाखंड तोड़ भजनावली	=)
दयानन्द पुष्पांजलि	=)	हंसी का गोल गप्पा	।)
हूर की परी	=)	संध्या	)। १) सैकड़ा
ईश्वरसिंह भजनावली	=)	हवन मन्त्र	)॥ २) सैकड़ा
शैतानों की कहानियां	=)	भजन महाभारत	=)
जादू की कहानियां	=)	भजन पाप की पापनी	=)
कृष्ण पुष्पांजलि	=)	बारामासा बहार	=)
स्त्री ज्ञान भजनावली	=)	आरती के कैलेन्डर	=)
भीष्म की गर्ज	=)	शेख चिल्ली की कहानियां	=)
भक्ति सागर	=)	सनातन भजन माला	≡)
भजन इतिहास	=)	आर्य भजन माला	≡)
खूनी खंजर	=)	बोलती फिल्मों के गाने	≡)
भजन रामायण	=)	कबीर भजन माला	=)
भजन पुष्पांजली	=)	भजन मीराबाई	≡)
फुदकती मैना	=)	दिलचस्प कहानियां	=)
तेजसिंह का तीसरा भाग	=)	कारखाना दस्तकारी	॥)

पुस्तक मिलने का पता :—

आर्य पुस्तक भण्डार, नई सड़क, देहली

जमना प्रिंटिङ्ग वर्क्स, पीपल महादेव, देहली।